महामति कहे ए साथ जी, ए इत के कहे बयान ।
श्री देवचन्द जी के सरूप की, नेक कहों पहिचान ॥६१॥

आप धाम धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि प्यारे सुन्दर साथ जी यह हकीकत भोजनगर की कही है । जिससे श्री देवचन्द्र जी के स्वरूप की कुछ पहचान कराई है ।

(प्रकरण ४, चौपाई २५३)

अब इहां से आये, बीच हलार देस ।
तहां नौतन पुरी मिने, बहुत जमा भये खेस ॥१॥

तब ये भाव लेकर देवचन्द्र जी हरदास जी के पास गए और अखंड ब्रज गोकुल की लीला के बारे में पूछा तो हरिदास जी ने कहा- आपको कोई भी बिना हमारे आचार्य श्री के समझा नहीं सकेगा इसलिए तुम नौतनपुरी हलार देश जाकर श्याम जी के मंदिर में कान जी भट्ट, जो राधा वल्लभी मार्ग के आचार्य हैं उनसे श्री मद्भागवत की चर्चा सुनो तो आप को अखंड ब्रज गोकुल और नित्य वृन्दावन के सब भेदों का ज्ञान हो जायेगा । नवतनपुरी में श्री देवचन्द जी के और कुटुम्ब परिवार के लोग रहते थे ।

इत माँ बाप आये रहे, उत वल्लभी मार्ग रहे जोर ।
तिन सेती रबद रहे, वे करने लगे सोर ॥२॥

श्री देवचन्द्र जी महाराज अपने माता-पिता, धर्म पत्नी एवं पुत्र बिहारी जी और कन्या यमुना बाई को साथ ला कर कुल परिवार सहित नौतनपुरी में बस गये (रहने लगे) । नौतन पुरी में राधा वल्लभी मार्ग की मूल गादी होने के कारण से इसका अधिक प्रचार था । इसलिए जब देवचन्द्र जी उन लोगों से अखण्ड गौलोक और श्री कृष्ण के दो स्वरूप, बाल मुकुन्द और बांके बिहारी जी का वर्णन करते थे तो वल्लभाचार्य के मार्ग के अनुयायियों से खटपट रहती थी और श्री कृष्ण के दो स्वरूप सुन कर लड़ने लगते थे ।

स्याम जी के देवल में, कथा कहे कान जी भट ।
निस्टा ले सुनने लगे, होय बल्लभियों से खटपट ॥३॥

अब देवचन्द्र जी महाराज स्याम जी के मन्दिर में जहां कान जी भट्ट श्री मद्भागवत की नित्य प्रति चर्चा सुनाते थे, वहां नेष्टाबन्ध होकर भागवत सुनने लगे । किसी न किसी विषय पर वल्लभियों से खटपट होती रहती थी ।

जलपान को तब करें, जब आहार देवें आतम ।
तब आहार आकार को, देवे न करे कम ॥४॥

श्री देवचन्द्र जी ने कान जी भट्ट द्वारा बताये ज्ञान के अनुसार से निश्चय कर लिया था कि प्रत्येक मनुष्य के पास मिथ्या तन और सत्य आत्मा है इसलिए वह जब तक आत्मा को आहार, अर्थात् जब तक भागवत की चर्चा सुन नहीं लेते थे तब तक जलपान नहीं करते थे । चर्चा सुनने के बाद ही आकार को पूरा भोजन देते थे ।

Nijanand App

जो कदी एक दोय स्लोक, आगे बाँचे होय तिन ।
तो फेर पुस्तक मंगाय के, वे ही सुने वचन ॥५॥

यदि कभी देवचन्द्र जी के मंदिर जाने से पहले कथा के एक दो श्लोक कान्ह जी कह भी देते थे तो देवचन्द्र जी कथा समाप्त होने के बाद पुनः श्री मद् भागवत पधरवा कर उन श्लोकों के अर्थ सुनते थे।

ऐसा जान के वह भट्ट, तोलों न खोलें पुस्तक ।
जोलों श्री देवचन्द्र जी ना आवहीं, और बात न करें बुजरक ॥६॥

कान्ह जी भट्ट ने देवचन्द्र जी की जब ऐसी नेष्टाबन्ध लग्न देखी तो देवचन्द्र जी के आने तक कान्ह जी भट्ट ना तो कथा ही प्रारम्भ करते थे और ना ही किसी विशेष प्रसंग को ही चलाते थे ।

रहे श्रोता सहर के चौधरी, और बड़े साहूकार ।
सो मार्ग बल्लभी मिने, होत खटपट हमेसा बेहवार ॥७॥

नौतनपुरी में बड़े-२ साहूकार चौधरी लोग बल्लभी मार्ग के अनुयायी थे । साहुकारी के गुमान के कारण किसी न किसी विषय पर मतभेद करते रहते थे ।

एक दिवस भट्ट को पूछिया, तुमारा क्या इनसे रूजगार ।
जब लग ए नहीं आवत, तोलों करो नहीं उच्चार ॥८॥

तब उन साहूकारों ने एक दिन कान जी भट्ट से पूछ ही लिया कि देवचन्द्र जी से आप को क्या प्राप्ति होती है जिन के आये बिना आप कथा प्रारम्भ नहीं करते हैं ।

तब कह्या कान जी भट्ट ने, मुझे न काहू की आस ।
मैं आगे बांचत स्याम जी के, सुने श्री देवचन्द्र जी खास ॥९॥

कान्ह जी भट्ट ने कहा कि श्री मद्भागवत की कथा सुना कर किसी से कुछ लेने की आशा रखना ये मेरा धन्धा नहीं है । मैं तो अपने प्रियतम श्याम सुन्दर जी को ही रिझाने के लिए यह कथा सुनाता हूं । देवचन्द्र जी जिस लग्न से सुनते हैं वह लग्न मैंने और किसी में देखी नहीं ।

मोहे प्राप्त कहिये तो तुम से, होय क्या इन गरीब से ।
पर तुम कबहूं मोहे पूछत, आगे पीछे स्लोक कहों मैं ॥१०॥

हे सेठों साहूकारो ! मुझे आप लोगों से तो धन की प्राप्ति हो भी जाती है । देवचन्द्र जी तो कोई सांसारिक काम धन्धा करते ही नही हैं तो वह मुझ को क्या दे सकते हैं और दूसरा आज दिन तक यदि मैं कथा में कोई प्रसंग आगे पीछे कह भी दूं तो तुमको कुछ खबर नहीं होती, और ना ही आप ने कभी कुछ पूछा है ।

Nijanand App

मैं एक स्लोक आगे कहों, कब हूं ए पास न होय ।
तो घरों जाय फेर पूछत, पुस्तक छोड़ावत सोय ॥११॥

और यदि मैं देवचन्द्र जी के आने से पहले एक भी श्लोक का अर्थ कह डालूं तो कथा की समाप्ति पर वह मेरे घर में आ कर दोबारा भागवत पधरवा कर उसी श्लोक का अर्थ सुनते हैं । जिसमें मेरा काफी समय लग जाता है ।

तिस वास्ते इन आये से, मैं करत उच्चार ।
मैं काहू की आसा न करों, मेरे चाहिए न कार वेहवार ॥१२॥

इसलिए मैं देवचन्द्र जी के आने पर ही कथा प्रारम्भ करता हूं । श्री मद् भागवत की कथा सुनाना कोई मेरा सांसारिक धन्धा नहीं है इसलिए मैं कथा सुना कर किसी से कुछ प्राप्ति हो ऐसी चाहना रखता ही नहीं ।

तब सब ही मोंगे रहे, बोलत नाहीं कोय ।
कथा सुन घरों पीछे फिरे, रोस जो मन में होय ॥१३॥

तब सब चौधरी और साहूकारों ने अपना अपमान समझा और कथा सुनकर चुपचाप अपने मन में रोष लेकर चले गये ।

छिद्र को ढूंढत रहे, रहे बाहिर द्रस्ट अहंकार ।
मार्ग को पावे नहीं, रहे रब्द को तैयार ॥१४॥

मन में यह भाव ले लिया कि देवचन्द्र जी के कारण ही हमारा अपमान हुआ है इसलिए देवचन्द्र जी के अवगुण ढूंढ कर उनको मंदिर से निकालना निश्चित कर लिया । उनको सत्य के ज्ञान की राह का पता नही था पर साहूकारी के गुमान के कारण झगड़ने को तैयार रहते थे ।

और श्री देवचन्द्र जी को प्रन रहे, ना होय द्वादसी को भागवत ।
ता दिन आप उपवास करें, आज आहार न पायो आतम इत ॥१५॥

अब उधर देवचन्द्र जी ने यह प्रण ले रखा था कि बिना भागवत सुने आहार नही लेना, द्वादशी वाले दिन व्यास जी के शरीर छोड़ने का दिन है इसलिए उस दिन कान्ह जी भट्ट कथा नही करते थे । वल्लभी मार्ग वाले उस दिन व्यास जी के नाम का भण्डारा करते थे । देवचन्द्र जी उस दिन आत्मा को आहार न मिलने के कारण से उपवास करते थे ।

Nijanand App

ए तो भांडा आहार का, क्योंकर देऊं आकार ।
श्री भागवत सुने नेष्टाबंध, रहे याही को विचार ॥१६॥

श्री देवचन्द्र जी को यह स्पष्ट हो चुका था कि शरीर तो झूठे आहार का पात्र है इसलिए जब आज हमारी आतम को चर्चा का आहार नही मिला तो मिथ्या शरीर को आहार क्यों दूं ? क्योंकि देवचन्द्र जी ने अपने जीवन का लक्ष्य श्री मद्भागवत् का ज्ञान सुनकर मुक्ति प्राप्त करना बना लिया था ।

यह बात उन लोगों ने, सुनी अपने कान ।
ए आहार एकादसी को करे, बारस उपवास रहे जान ॥१७॥

वल्लभी मार्ग के सेठ साहूकारों ने जब यह बात सुनी कि देवचन्द्र जी द्वादशी के भण्डारे वाले दिन प्रसाद नही लेते और एकादशी के उपवास वाले दिन स्वादिष्ट भोजन लेते हैं ।

एह निंदा लेय के, करने लगे विचार ।
अब दाव हमारा आइया, ए कैसा धर्म वेहेवार ॥१८॥

तब उन लोगों ने इस विषय को देवचन्द्र जी की निन्दा का विषय बनाकर सोचा कि अब हम कान्ह जी भट्ट से पूछेंगे कि एक ही धर्म के अन्दर दो जुदा-जुदा धर्म व्यवहार कैसे ?

आए सभा में मिल के, पूछी कानजी भट्ट से ।
ऐसा उपदेस तुम दिया, जो प्रसाद ले एकादसी में ॥१९॥

तब सब सेठिया लोग मिलकर मंदिर आये और कान जी से पूछा कि आपने क्या देवचन्द्र जी को उपदेश किया है कि एकादशी वाले दिन भोजन किया करो ।

करे बारस को उपवास, यह कौन सास्त्रों बताइ ।
यों श्री देवचन्द्र जी करत हैं, सो हम सों कहो समझाइ ॥२०॥

और वह द्वादशी के भण्डारे वाले दिन उपवास करते हैं । देवचन्द्र जी ऐसा करते हैं । यह श्री मद्भागवत में कहां लिखा है हमें बताएं ।

तब कान जी भट्ट नें, इन भांत दिया उत्तर ।
जो वे करें सो समझ के, फेर पूछ के देऊं खबर ॥२१॥

तब कान्ह जी भट्ट ने उन्हें उत्तर दिया कि देवचन्द्र जी जो कुछ भी करते हैं । वह श्री मद्भागवत के अनुसार समझकर ही करते हैं जैसा उलट-पुलट आप लोग उनके प्रति कह रहे हो, ऐसा वे करते तो नही होंगे पर आप लोगों ने कहा है तो उन्हें आने दो, मैं पूछ कर बताता हूं ।

Nijanand App

यों करते श्री देवचन्द्र जी, आये बिराजे सभा में ।
कान जी भट्टें पूछिया, यों श्री देवचन्द्र जी सें ॥२२॥

उनका यह वार्तालाप हो ही रहा था कि देवचन्द्र जी मंदिर में पधारे तो कान्हजी ने उनसे पूछा-

करत बारस को उपवास, एकादसी को करत आहार ।
मैं तो एह मानी नही, श्री देवचन्द्र जी करन हार ॥२३॥

हे देवचन्द्र जी ! ये सब लोग कहते हैं कि आप एकादशी को भोजन करते हैं और द्वादशी वाले भण्डारे के दिन उपवास करते हैं । मैंने इन लोगों के कहने पर तो विश्वास नही किया कि देवचन्द्र जी ऐसा करते हैं कृपया आप इस बारे में स्पष्ट कहिए ।

तब श्री देवचन्द्र जी उत्तर दियो, एही भांत हम करत ।
तब सबों ने कहूया अर्थ कहो, हम समझत नाहीं इत ॥२४॥

तब देवचन्द्र जी ने उत्तर दिया कि हे कान्ह जी भट्ट ! जैसा ये लोग कहते हैं हकीकत में मैं वैसा ही करता हूं । तब सब वल्लभियों ने मिलकर कहा देवचन्द्र जी ! कृप्या इसका अर्थ कहां लिखा है समझाइये। क्योंकि हम आज दिन तक ऐसा समझ ही नही पाए ।

पर इतना हम समझत हैं, जो श्री भागवत दरखत ।
ताकी एक डारी को, कोई बिरला पहुंचत ॥२५॥

पर इतना हम अवश्य जानते हैं कि हिन्दुओं के शास्त्रों में श्री मद्-भागवत एक ऐसा ग्रन्थ है जिसके एक स्कन्ध के विषय को कोई विरला ही समझ सकता है ।

पर तुम पात पात की रग में, है दरखत विस्तार ।
तहां तुम सब में फिरवले, ऐसो औरन को नही विचार ॥२६॥

पर तुम तो ऐसे श्रोता हो कि भागवत के एक स्कन्ध के एक-एक अध्याय के एक-एक श्लोक और श्लोक के एक-एक अर्थ को आपने ही समझा है और कोई भी आज तक नही समझ सका ।

कहूया ए तो तुम कहत हो, सास्त्रों के वचन ।
ताको सांच जान के, लेत हैं समझाए मन ॥२७॥

तब श्री देवचन्द्र जी ने कहा ये तो आपकी ही महानता है जो मुझसे कटाक्ष भरे शब्दों से व्यवहार कर रहे हो । मैं तो श्री मद् भागवत को सत्य ग्रन्थ मान कर इसको जीवन में उतारता हूं । जिससे मेरे मन को शान्ति प्राप्त होती है ।

Nijanand App

तब श्री देवचन्द्र जी ने कही, हम लिया ऐसा पन ।
है भागवत आहार आतम को, जोलों सुनने न पावे मन ॥२८॥

तब श्री देवचन्द्र जी ने कहा कि श्री मद् भागवत के ग्यारहवें स्कन्ध के बाइसवें अध्याय के अनुसार आत्मा को सत्य मानकर और श्री मद् भागवत की चर्चा को आत्मा का आहार मानकर चलता हूं जब तक भागवत की चर्चा को मैं सुन नही लेता तब तक भोजन नही लेता ।

सो भागवत द्वादसी को,तुम नाहीं बांचत ।
मैं तब आकार को, आहार न देवत ॥२९॥

क्योंकि द्वादशी वाले दिन भागवत की कथा नही होती और मेरी आतमा को आहार नही मिलता इसलिए मैं उपवास करता हूं ।

और एकादसी को लेत प्रसाद, ताको भेद इतना जानत ।
कोट एकादसी एक सीत के, तुल्य न आवत ॥३०॥

और एकादशी वाले दिन जो मैं प्रसाद लेता हूं तो भागवत के अनुसार यह मैं समझा हूं कि कोट एकादशी के व्रत का फल श्री कृष्ण पारब्रह्म के प्रसाद के एक कण के तुल्य नही है ।

श्री पारब्रह्म लीला रस का, यह जो ग्रन्थ श्री भागवत ।
तिनको सुन के स्वर्ग का, ए सब साधन करत ॥३१॥

श्री मद् भागवत के दसवें स्कन्ध में तो पारब्रह्म अक्षरातीत की रास लीला का जो अखण्ड रस है जिसके सुनने से जीव को मुक्ति प्राप्त होती है । ऐसे रस को सुन कर तुम एकादशी के द्वारा स्वर्ग प्राप्ति का साधन करते हो । स्वर्ग तो भागवत के १२वें स्कन्ध के चौथे अध्याय के अनुसार महाप्रलय में लय हो जायेगा।

तब कान जी भट्टें कहया, देवो इनका उत्तर ।
जवाब न आया काहू को, धन धन कहया यों कर ॥३२॥

श्री देवचन्द्र जी के मुखार बिन्द से भागवत के प्रति इतना ऊँचा भाव सुनने के पश्चात् भट्ट जी उन साहूकारों से बोले-अब तुम सब इनका उत्तर दो । किसी को भी उत्तर नही आया तो उन्होंने मन में लज्जित हो कर देवचन्द्र जी से क्षमा मांगी और कहा तुम धन्य हो ।

इन भांत चरचा मिने, रहत है एक रस ।
नीर नयनों झरत है, जो वाणी सुने सरस ॥३३॥

श्री देवचन्द्र जी भागवत की चर्चा को एक रस हो कर सुनते थे और जब बृज और रास की प्रेम मयी लीला को सुनते थे तो नैनों नीर झरता था । क्योंकि इस संसार में सबसे ऊंचा ज्ञान है ।

Nijanand App

यों चौदह वर्ष नेष्टा बंध, बचन ग्रहे सब सार ।
या उपरान्त कृपा भई, ताको कहों विचार ॥३४॥

इस प्रकार सच्ची लगन से नेष्टाबन्ध हो कर श्री मद् भागवत के सब सार का रस चौदह वर्ष तक पान किया । इसके पश्चात् पारब्रह्म अक्षरातीत जो धाम के धनी हैं अपनी अंगना श्यामा महारानी पर किस प्रकार कृपा करके दर्शन देते हैं । अब उस विषय को कहता हूं । हे प्यारे सुन्दरसाथ जी सुनकर विचार कीजिए ।

महामति कहें ए साथ जी, ए नौतनपुरी की हकीकत ।
और भी आगे की कहों, भई जो बीतक इत ॥३५॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे प्यारे सुन्दर साथ जी ! यह आपको श्री देवचन्द्र जी के चौदह वर्ष नेष्टा बन्ध भागवत नौतनपुरी में सुनने का प्रसंग कहा है । अब आगे और जो असल हकीकत का प्रसंग है । वह कहता हूं ।

(प्रकरण ५ चौपाई २८८)

दरसन

अब कहों श्री देवचन्द्र जी की, जो बात मूल बुजरक ।
जो मेहर सैंयन पर, करी सुभानुल हक ॥१॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे प्यारे सुन्दर साथ जी ! अब श्री देवचन्द्र जी के जीवन काल में जो सबसे बड़ी महत्वपूर्ण घटना घटी वह सुनो । और वह मेहर अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म ने अपनी आत्माओं पर की है ।

चौदह वर्ष नेष्टाबन्ध, सुनयो श्री भागवत जब ।
आवेस लीला भई, सब नजरों आया तब ॥२॥

जब चौदह वर्ष नेष्टाबन्ध भागवत सुनते बीत गये तब अक्षरातीत पारब्रह्म ने अपने आवेश स्वरूप से दर्शन दे कर जागृत बुध पराशक्ति का वह अनुपम ज्ञान देवचन्द्र जी को दिया जो आज दिन तक इस संसार में नहीं था ।

कछू कसनी भई आकार को, इन समें इस ठौर ।
पर नजरों कछु न आइया, दज्जाल लड़ने लगा जोर ॥३॥

इस घटना से पूर्व देवचन्द्र जी को कुछ शरीरिक कसनी करनी पड़ी पर उन्होंने शरीरिक कसौटियों को कभी कुछ नही समझा और दज्जाल ने अनेकों रूकावटें डाली ।

Nijanand App